वाराणसी शहर

बनारस के नाम से सुप्रसिद्ध इस शहर को 1956 में औपचारिक रूप से वाराणसी का नाम दिया गया। वाराणसी शब्द ''वारणा'' और ''असी'' नामक दो पावन नदियों के नाम को जोड़कर बना है। ये नदियां 6 मील के फासले पर गंगा में मिल जाती हैं। लगभग 500 ईसा पूर्व में यह नगर काशी के नाम से जाना जाता था। काशी का अर्थ है: वह स्थान जहां, ''परम प्रकाश प्रतीत होता है।'' उस समय यह नगर, काशी नाम के ही साम्राज्य की राजधानी था। उत्तर भारत में स्थित शिव की आराधना की यह महान नगरी अत्यंत प्राचीन काल से ही मानव सभ्यता के विकास की साक्षी रही है और ऐसी तीर्थस्थली है, जहां समस्त भारत की तुलना में सबसे अधिक संख्या में तीर्थयात्री पहुंचते हैं। यही कारण है कि बनारस को भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक राजधानी माना जाता है।

सात पावन नगरों में गिने जाने के साथ-साथ यह नगर, बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक तथा शक्तिपीठ भी है और इस प्रकार, हिन्दुओं के लिए परम श्रद्धेय स्थान है। पावन पुनीत गंगा के तट पर बसा यह शहर आध्यात्मिक जागृति, ज्ञान प्राप्ति और विद्यार्जन का केन्द्र है। माना जाता है कि यहां सभी अन्य तीर्थस्थलों के पुण्य प्राप्त हो जाते हैं और यह मान्यता है कि इस नगरी में जीवन चक्र का अंत होने पर मनुष्य को मोक्ष अर्थात मुक्ति प्राप्त होती है और उसके लिए स्वर्ग का द्वार खुल जाता है। यह नगर, भारत के अनेक महान तपस्वियों की तपोभूमि रहा है। गौतम बुद्ध, महावीर, कबीर, तुलसीदास, शंकराचार्य, रामानुज और पतंजलि सभी ने यहां तपस्या की। बनारस के इसी नगर में सारनाथ भी स्थित है, जहां बुद्ध ने लगभग 530 ई. पूर्व में अपना प्रथम उपदेश दिया था।

हिन्दू श्रद्धालुओं के लिए परम पवित्र और भगवान शिव की नगरी बनारस, तीर्थयात्रियों के लिए परम श्रद्धेय है और लोग यहां, मोक्षदायिनी गंगा में स्नान करने के प्रयोजन से खिंचे चले आते हैं। यहां के 5 कि.मी. के लगभग संपूर्ण नदी तट को घाटों में परिवर्तित कर दिया गया है। बनारस के ये घाट विश्व प्रसिद्ध हैं। नदी किनारे पत्थर के इन सीढ़ीनुमा घाटों पर श्रद्धालु विविध प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान करते हैं। हिन्दू धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ये घाट, भौतिक, अभौतिक और पारलौकिक रूप में अभिव्यक्त दैवीय तत्वों के अभिन्न पूरक अंग हैं। बनारस में स्नान और दाह संस्कार के लिए कुल मिलाकर लगभग 100 घाट हैं। दाह संस्कार के लिए मणिकर्णिका घाट को प्रमुख व सबसे पावन माना गया है। इन दावों से जुड़ी अनेक हिन्दू किंवदन्तियां हैं और इनमें से कई घाट निजी किस्म के हैं। वाराणसी में छोटे-बड़े लगभग 23,000 मंदिर हैं, जिनमें भगवान शिव का काशी विश्वनाथ मंदिर (जिसे स्वर्णिम मंदिर के नाम से भी जाना है) सबसे प्रसिद्ध है। यह मंदिर, भगवान शिव को समर्पित 12 ज्योतिर्लिंगों में शामिल है। बनारस के अन्य प्रसिद्ध मंदिरों में हनुमान जी का संकट मोचन हनुमान मंदिर तथा 18वीं शताब्दी में निर्मित दुर्गा कुंड मंदिर भी शामिल हैं। दुर्गा मंदिर की पहचान यहां पाए जाने वाले वानरों से भी है। ये वानर आस-पास के विशाल वृक्षों पर रहते हैं।

बनारस शहर, पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के पश्चिमी क्षेत्रों के लिए प्रमुख वाणिज्यिक केन्द्र की भूमिका भी निभाता है। रेशम की बुनाई वाराणसी का प्रमुख उद्योग है। यह शहर भारत में महीन रेशम और बनारसी साड़ियों तथा सोने एवं चाँदी के धागों के जरी कार्य के लिए प्रसिद्ध है। यहां की साड़ियां शादी-विवाह और विशेष अवसरों पर बड़े शौक से पहनी जाती हैं। वाराणसी में जिन अन्य वस्तुओं का उत्पादन और व्यापार होता है, उनमें मिर्जापुर की हाथ से तैयार कालीन, गलीचे, दरियां, पीतल और तांबे से बनी वस्तुएं, लकड़ी व मिट्टी से बने खिलौने, हस्तशिल्प सामग्रियां, स्वर्ण आभूषण तथा वाद्य यंत्र शामिल हैं।

वाराणसी, शिक्षा का भी प्रमुख केन्द्र है। यहां का बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, भारत के सबसे पुराने और विशालतम शैक्षिक संस्थानों में से एक है और आज देश के सबसे प्रमुख शैक्षणिक केन्द्रों में शामिल है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना महान राष्ट्रवादी नेता तथा शिक्षाविद् पंडित मदन मोहन मालवीय ने 1916 में की थी। नगर के बाह्य हिस्से में बसा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का विस्तृत परिसर 1300 एकड़ में फैला हुआ है। आज, भारत के विशालतम आवासीय विश्वविद्यालयों की सूची में शामिल बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के अंतर्गत प्राचीन भारतीय आयुर्वेद चिकित्सा शैली के साथ-साथ इंजीनियरी, कृषि, वाणिज्य, प्रौद्योगिकी, संगीत एवं ललित कला, धर्म शास्त्र व प्राच्य अध्ययन के केन्द्र मौजूद हैं।

भीड़-भाड़, चहल-पहल और शोर-गुल से भरा आज का वाराणसी शहर, प्राचीन समय में मनोरम पहाड़ियों, हरे-भरे वन्य क्षेत्रों और कल-कल करते झरनों के बीच में बहती सरस-सलिल गंगा नदी की गोद में बसा मनोरम क्षेत्र था। बनारस से पहली बार परिचय होने पर संभव है कि यहां के वातावरण में घुला रोमांच और यहां की ऊर्जा, यहां पहुंचे किसी भी यात्री को पहले-पहल सरोबार कर दे। परन्तु, कोलाहल भरी इस ऊपरी सतह के ठीक नीचे इस शहर का वह पहलू है, जो यहां आने वाले हर व्यक्ति को असीम शांति और आध्यात्मिक ज्ञान की आत्मिक अनुभूति से अभिभूत कर देता है।

वाराणसी शहर ने न केवल अपने धार्मिक व सांस्कृतिक महत्व को बनाए रखा है बल्कि इसमें ऐतिहासिक महत्व की छटा भी जोड़ी है, जो विश्वभर के पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है।

डाक विभाग, वाराणसी शहर पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ	:	इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विरूपण	:	श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	301590
Stamps Printed	:	301590
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The above philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

Varanasi City

Banaras as most commonly called was officially renamed in 1956 as Varanasi, a name given to the city by adding the names of two holy rivers "Varana" and "Asi" which meet the river Ganges within 6 miles. It was first known as Kashi, which means "where the supreme light shines", when it was the capital of the kingdom of the same name in about 500 BC. This great north Indian center of Shiva worship has seen the progress of human civilization since very ancient time and is the most visited pilgrimage destination in all of India. Because of this the city is considered as the cultural and religious capital of India.

The city is considered as one of the seven Holy Cities, one of the twelve Jyotir Linga sites and also a Shakti Pitha site, and therefore is the most favored place for Hindus. Built on the banks of sacred Ganga and celebrated as a seat of all enlightenment, wisdom and learning it is said to combine the virtues of all other places of pilgrimage and anyone who ends their earthly cycle here is said to attain Moksha or Liberation and is transported straight to heaven. The city has been a favored hermitage site for many of India's most venerated sages - Gautama Buddha and Mahavira, Kabir and Tulsi Das, Shankaracharaya, Ramanuja and Patanjali all meditated here. The city encompasses Sarnath, where Buddha preached his first sermon in about 530 BC.

Holiest of cities to Hindus and earthly abode of Lord Shiva, Banaras is considered as a beacon for pilgrims who come to bathe in the sacred Ganga River. Almost the entire city's 5 km of river banks have been converted into Ghats. The Ghats in Varanasi are world-renowned embankments made in steps of stone slabs along the river bank where pilgrims perform ritual ablutions. The Ghats are an integral complement to the Hindu concept of divinity represented in physical, metaphysical and supernatural elements. The city on the whole has around 100 bathing and burning Ghats, of which Manikarnika ghat is the most sacred. This is the main burning ghat and one of the most auspicious places. Many ghats are associated with Hindu legends and several are now privately owned. Varanasi is known for having around 23000 temples and the most popular ones are the Kashi Vishwanath Temple of Shiva (also known as Golden temple); one of the 12 Jyotirlinga Shiva temples , the Sankat Mochan Hanuman Temple; the most scared temples of the Hindu God Hanuman and the 18th Century Durga Kund Temple, known for monkeys that reside in the large trees nearby.

The City serves as a major commercial centre in the eastern Uttar Pradesh state and western Bihar state. Silk Weaving is the dominant industry in Varanasi. The City is known throughout India for its production of very fine silk and Banarasi saris, brocades with gold and silver thread work, which are often used for weddings and special occasions. Other major commodities manufactured and traded in Varanasi include hand-knotted Mirzapur carpets, rugs, dhurries, brassware, copperware, wooden and clay toys, handicrafts, gold jewellery, and musical instruments.

Varanasi is also notable centre of education. Banaras Hindu University (BHU) is one of the oldest and largest educational institutions and is one of India's most prominent seats of learning. Founded in 1916 by the great nationalist and educator Pandit Madan Mohan Maliviya, BHU has a 1,300 acre campus on the outskirts of the city. Today one of the largest residential universities in India, it has schools of both the ancient Indian Ayurveda practice, colleges of engineering, agriculture, commerce, technology, music and fine arts, theology and oriental studies.

Today, a crowded, bustling and noisy city, Varanasi was in antiquity an area of gently rolling hills, lush forests, and natural springs bordered by the magical waters of the river Ganges. Initially first-time visitors to the city may find themselves overwhelmed by the sensory stimulation provided by the place, yet just beneath the surface is a presence of peacefulness and spiritual wisdom.

Varanasi has not only maintained the religious and cultural importance attached to the city but also has added a flavor of historical importance to attract the tourists from all over the world.

Department of Posts is pleased to release a Commemorative stamp on Varanasi City.

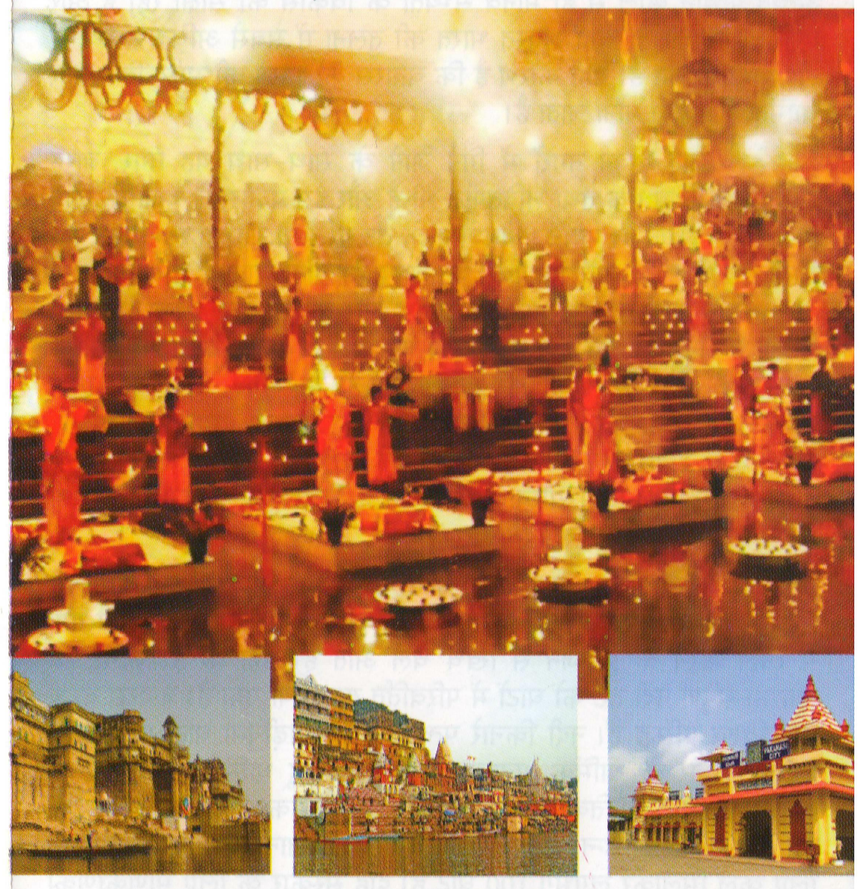
Credits:-

Text : Based on the material available on internet

Stamp / FDC/ Cancellation Cachet : Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

वाराणसी शहर VARANASI CITY



विवरणिका
BROCHURE